प्रख्यापन

" प्रयोगवाद के परिप्रेक्ष्य में कवि गिरिजाकुमार माथुर "

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. के लघु शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही हूँ। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई।

शिरवळ.

दिनांक 27-5-82

Mane

प्रा.कु.सुनिता ज्ञानेश्वर माने

अनुसंधाता

प्रा. डॉ. राजेंद्र शहा.
एम. ए. एम. फिल्. पीच्. डी.
प्राध्यापक हिंदी विभाग,
मुधोजी महाविद्यालय,
फलटण, जि. सातारा (महाराष्ट्र).

प्रमाणपत्र

मैं प्रा. डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मुधोजी महाविद्यालय, फलटण, यह प्रमाणित करता हूँ कि कु. सुनिता ज्ञानेश्वर माने ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिये प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध " **प्रयोगवाद के परिप्रेक्ष्य में कवि गिरिजाकुमार माथुर** " मेरे निर्देशन में बडे परिश्रम के साथ सफलता पूर्वक पूरा किया है। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है।

मैं संस्तुति करता हूँ कि इसे परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाय।

निर्देशक

Shah
25.5.02

(प्रा. डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा)

भूमिका

मेरा बचपन से ही काव्य के प्रति लगाव था। बी.ए. तथा एम.ए. का अध्ययन करते समय आधुनिक हिंदी कवियों का अध्ययन किया था। आधुनिक काव्य का अध्ययन करते समय मैंने गिरिजकुमार माथुरजी की 'मशीन की पूर्जा', 'प्रद्रह अगस्त' और 'कौन थकान हरे जीवन की' आदि कविताओं का अध्ययन किया। तभी से गिरिजाकुमार माथुरजी मेरे प्रिय कवि बने। जिस वक्त एम.फिल्. के लघुशोध प्रबंध का विषय चयन के बारे में आदरणीय डॉ. सुर्वेजी ने मेरे सामने विभिन्न विषय रखे तो मैंने श्री. गिरिजाकुमार माथुरजी को चुना। प्रा.डॉ.राजेंद्र शहा जो इस लघु शोध-प्रबंध के मार्गदर्शक है, उन्होंने और डॉ. सुर्वेजी ने गिरिजाकुमार माथुरजी के काव्यों के बारें में मेरे मन में गहरी रूचि पैदा की उसीके फलस्वरूप मैंने "प्रयोगवाद के परिप्रेक्ष्य में कवि गिरिजाकुमार माथुर" विषय निहित किया।

श्री गिरिजाकुमार माथरजी के प्रयोगवादी काव्यों का विश्लेषण मैंने सात अध्यायों में विभाजित किया है पहले अध्याय " प्रयोगवाद: सामान्य विवेचन " में प्रयोगवाद का परिचय, परिभाषा आलोचना उसकी विशेषताएँ और प्रयोगवाद के कवियों का परिचय होगा। दूसरे अध्याय " गिरिजाकुमार माथुर - जीवनवृत्त, व्यक्तित्व और कृतित्व " में माथुरजी के जीवनवृत्त, शिक्षा, दीक्षा तथा उनके कृतित्व की चर्चा की जायेगी। तीसरे अध्याय " गिरिजाकुमार माथुर का प्रयोगवादी काव्य में वस्तुगत प्रयोग " में माथुरजी की काव्य की वस्तुगत विशेषताएँ जिसमें व्यक्ति समाज परिवेश और साहित्य, सामाजिक और राजनितिक परिप्रेक्ष्य, समसामयिकता और चिरंतन सत्य, मूल्याबोध और साहित्य ऐतिहासिक एवं भौगोलिक युगबोध, आर्थिक परिप्रेक्ष्य आदि देखी जायेगी। " गिरिजाकुमार माथुर का प्रयोगवादी काव्य - प्रवृत्तिगत प्रयोग " इस चौथे अध्याय में माथुरजी के काव्य की प्रवृत्तिगत विशेषताएँ, प्रणयानुभूति, वैयक्तिकता, देशानुराग, विश्वबंधुत्व, मानवता वाद, सामाजिक संदर्भ, प्रकृति चित्रण, वैज्ञानिकता, बौद्धिकता आदि दिखी जायेगी। पंचम अध्याय - " गिरिजाकुमार माथुर का प्रयोगवादी काव्य - शिल्पगत प्रयोग " में माथुरजी ने जो शिल्पगत अलंकार, छन्द, शैली, भाषा आदि में नये नये प्रयोग करके अभिव्यंजना-पद्वति को अधिकाधिक उन्नत एवं उत्कृष्ट और विविधमुखी बनाया है उसका अध्ययन करेंगे। छटे अध्याय " तार-सप्तक के प्रयोगवादी कवि और माथुरजी: तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में माथुरजी के काव्य और सप्तक कवियों के काव्यों की विवेचना देखेंगे। तो " समापन " इस सातवे अध्याय में पहले अध्याय से लेकर छटे अध्याय

तक किये गये विवेचन के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

न.डॉ.राजेंद्र शहाजी इस लघु शोध-प्रबंध के निर्देशक हैं, आप की कार्य तत्परता और समय की पाबंदी न लगाते हुअे मिलनेवाला मौलिक मार्गदर्शन ने ही मुझे यह लघु शोध-प्रबंध लिखने और पूरा करेने की प्रेरणा दी। आप ने अत्यंत व्यस्त रहने पर भी अपना अमूल्य वक्त मुझे देकर इस कृति का एक-एक पृष्ठ देखा - पढा और सुधारा लघु शोध प्रबंध की समस्त अच्छाइयों और मौलिक उपलब्धियों का पूरा श्रेय पूज्यवर डॉ.राजेंद्र शहा को है। मेरी समझ में नहीं आता कि उनके सुयोग्य पथ प्रदर्शन के लिये कृतज्ञता किन शब्दों में व्यक्त की जाय?

विषय चयन, सामग्री, संकलन तथा बार-बार इस विषय की चर्चा के द्वारा मुझे प्रेरणा देनेवाले और अपन बहुमूल्य समय देकर मुझे मार्गदर्शन करनेवाले आदरणीय डॉ. गजानन सुर्वेजी की सहाय्यता के बिना यह लघु शोध-प्रबंध का काम मेरी जैसी आलसी व्यक्ति के हाथो से कठिन था। मेरे परमपूज्य पिताजी 'नाना' जिन्होंने मुझे हरवक्त मार्गदर्शन करके प्रोत्साहन देकर हौसला बढाया मैं उनकी आजन्म ऋणी रहूंगी। इसीप्रकार मा.प्राचार्य, डॉ. विष्णुपंत जगताप, प्राचार्य बिरबल शिंदे प्रा. छायादेवी घोरपडे, प्रा. सुभाषहसबेप्रा, आकाराम भंडारे आदि मुझे हमेशा प्रोत्साहन देते रहे है। उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। 'जयकर' ग्रंथालय पुणे विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल श्री. चंद्रकांत फरांदे, एल.बी.एस. कॉलेज, सातारा तथा मुधोजी महाविद्यालय फलटण के ग्रंथालय के कर्मचारीयों की सहायता के लिये भी मैं उनकी ऋणी हूँ। इसी प्रकार 'कला और वाणिज्य महाविद्यालय' शिरवळ के मेरे सहकारी द्वारा दी गयी सुविधाओं और सहाय्यता के लिये आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। इस लघु शोध-प्रबंध के टंकलेखन और सुयोग्य प्रस्तुती के लिये सौ. प्रतिम महाजनी, 'प्रितम एजन्सीज', सातारा ने जो कष्ट उठाये है, उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ।

विविध प्रयत्नों के बावजूद भी इस लघु शोध-प्रबंध में कुछ त्रुटियाँ रह जाना संभव है। निर्दोषता का दावा तो मैं नहीं कर सकती। फिर भी यदि सहृदय पाठकों को श्री गिरिजाकुमार माथुरजी के प्रयोगवादी काव्यों का परिचय देकर उनका रसास्वादन कराने में मुझे किंचित मात्र भी सफलता मिली तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक समझूँगी।

शोध छात्र

(हस्ताक्षर)

अनुक्रमणिका

अध्याय पहला : **" प्रयोगवाद : सामान्य विवेचन "**

1) प्रयोगवाद का जन्म, प्रयोग एक विश्लेषण, जन्मभूमि योरोप, मूलतः पलायनवादी काव्य, हिंदी प्रयोगवादी साहित्य, परिभाषा, प्रयोगवादी का मूल उद्देश्य, नूतनता का अत्याधिक मोह।

2) प्रयोगवादी कविता की प्रमुख विशेषताएँ - अतिशय कल्पनाशीलता अथवा अतिशय यथार्थवाद, प्रेम का स्वरूप, विद्रोह का स्वर, अन्तः चेतना का अभाव, समाजिक एवं राजनीतिक विद्रुपता के प्रति व्यंग्य, वैचित्र्य प्रदर्शन, नई कविता में प्रकृतिचित्रण, नित नवीनता का आग्रह।

3) प्रयोगवादी कवि - जीवनपरिचय और कृतित्व, काव्यसाधना अज्ञेय, गजानन मधव - 'मुक्तिबोध', भारतभूषण अग्रवाल, नेमिचंद्र जैन, डॉ.प्रभाकर माचवे, डॉ.रामविलास शर्मा।

अध्याय द्वितीय : **" गिरिजाकुमार माथुर - जीवनवृत्त, व्यक्तित्व और कृतित्व "**

जन्म तथा जन्मस्थान, बाल्यकाल, संस्कार, शिक्षा, विवाह, आजीविका, व्यक्तित्व, साहित्य की प्रेरणा, कृतित्व, रचनाएँ - 'मंजीर', 'नाश और निर्माण', 'तार-सप्तक', 'धूप के धान', छाया मत छूना मन', 'शिलापंख चमकीले'

अध्याय तृतीय : **" गिरिजाकुमार माथुर का प्रयोगवादी काव्य - वस्तुगत प्रयोग "**

व्यक्ति समाज परिवेश और साहित्य, सामाजिक परिवेश ओर साहित्य, राजनितिक परिप्रेक्ष्य, समसामायिकता और चिरंतन सत्य, आर्थिक परिप्रेक्ष्य, मूल्याबोध एवं साहित्य, जीवनमूल्य एवं मानवीयता, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक युगबोध, समापन।

अध्याय चतुर्थ : **" गिरिजाकुमार माथुर का प्रयोगवादी काव्य - प्रवृत्तिगत प्रयोग "**

प्रणयानुभूति, वेदनानुभूति, सौंदर्यानुभूति, वैयक्तिकता, देशानुराग और राष्ट्रीयता, विश्वबंधुत्व और मानवतावाद, यथार्थबोध और सामाजिक संदर्भ, लोकजीवन, प्रकृचित्रण, वैज्ञानिकता, बौद्धिकता, अन्य विशेषताएँ।

अध्याय पंचम : **" गिरिजाकुमार माथुर का प्रयोगवादी काव्य - शिल्पगत प्रयोग "**

गिरिजाकुमार माथुरजी का काव्य संबंधी दृष्टिकोण, कवि माथुर की भाविभिव्यक्ति और रसयोजना, माथुरजी की काव्य का शिल्पविधान - भाषाशिल्प, प्रतीक विधान,

बिंबविधान, छंदविधान, माथुरजी की कविताओं में अप्रस्तुत योजना, जनभाषा का प्रयोग, मुहावरे और लोकोक्ति का प्रयोग, अभिनव शिल्प, नव्य ध्वनि प्रयोग, नव्य शब्दों का प्रयोग, संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयोग, प्रकृतिशिल्प, शैली वैविध्य, समापन.

अध्याय षष्ट : **" तार-सप्तक" के प्रयोगवादी कवि और माथुरजी का तुलनात्मक अध्ययन "**

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' और माथुरजी, भारतभूषण अग्रवाल और माथुरजी, डॉ. प्रभाकर माचवे और माथुरजी, नेमिचंद्र जैन और माथुरजी, रामविलास शर्मा और माथुरजी, अज्ञेय और माथुरजी।

अध्याय सप्तम : **" समापन "**